दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 26.07.2022

प्रकाशनार्थ

कारिगल संघर्ष के बाद भारतीय सुरक्षा व्यवस्था का कायाकल्प-प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा

दिनांक 26.07.2022 गोरखपुर। कारगिल युद्ध भारत का पहला ऐसा युद्ध था, जिसका टेलीविजन पर सीधा प्रसारण किया गया और इस युद्ध को भारत के घर–घर पहुंचाया था। कारगिल युद्ध के बाद भारत सरकार द्वारा गठित कारगिल युद्ध की समीक्षा के लिए बनाई गई **के.सुब्रमण्यम** समिति के रिपोर्ट के आधार पर चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ पद का सृजन हुआ। साथ ही भारत ने आज अपने राष्ट्रीय सुरक्षा का सामर्थ्य भी बढ़ा लिया है जिसका उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि यमन संकट 2015 के समय भारतीयों को निकालना, कोरोना काल मे चीन से भारतीयों की वापसी तथा रूस–युक्रेन युद्ध से अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालने में सफलता प्राप्त की जो भारत की कूटनीतिक एवं राजनीतिक सामर्थ्य का परिचायक है। आज अमेरिका के बाद भारत विश्व का दूसरा ऐसा देश है जो देश के बाहर किसी भी देश में अपने नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकालने का सामर्थ्य रखता है। आज भारत सुरक्षा की दृष्टि से इतना सामर्थ हो गया है की अपने साथ–साथ विश्व के 84 देशों को शस्त्र आपूर्ति करता है तथा आत्मनिर्भर भारत के तहत 67 प्रतिशत स्वदेशी उपकरण का प्रयोग भारतीय सेनाओं में किया जाने लगा है। यह भारत का सामर्थ्य ही है कि 27 फरवरी 2020 को अभिनंदन को 24 घंटे के अंदर ही पाकिस्तान ने भारत को वापस कर दिया था।

उक्त बातें दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग द्वारा आयोजित कारगिल विजय दिवस के अवसर पर **'कारिगल युद्ध के दो दशक, भारतीय रक्षा सामर्थ्य'** विषय पर विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए **मुख्य अतिथि प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा, विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्राजिक अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय गोरखपुर** ने कही।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि कारगिल युद्ध पाकिस्तान का एक छद्म युद्ध था। जिसमें पाकिस्तान के जनरल ने अपने निर्वाचित सरकार को भी सूचित नहीं किया था। उस समय के तत्कालिक सेना अध्यक्ष जनरल परवेज मुशर्रफ और कुछ अधिकारियों को ही कारगिल घुसपैठ का पता था। पाकिस्तान पूर्व के युद्धों से यह जान गया था कि वह प्रत्यक्ष रूप से युद्ध में भारत से नही जीत सकता इसलिए उसने छद्म युद्ध के रूप में कारगिल युद्ध का सहारा लिया। उन्होंने आगे बताया कि पाकिस्तान विश्व राजनीति में अकेला पड़ गया था और भारत को सहानुभूति और समर्थन प्राप्त हो रही थी। कारिगल संघर्ष के बाद भारतीय सुरक्षा व्यवस्था का कायाकल्प भी हुआ है।

कार्यक्रम का संचालन विभाग के प्रभारी डॉ. राम प्रसाद यादव ने किया तथा स्वागत **आई.क्यू.ए.सी. कोऑर्डिनेटर प्रो. परीक्षित सिंह** ने किया तथा इस उपलक्ष्य में विभाग के **नवनियुक्त सहायक अध्यापक डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह** का स्वागत विभाग द्वारा किया गया। इस अवसर पर विभागीय शिक्षक विकास पाठक, डॉ. संजीव कुमार सिंह, डॉ. दीपक साहनी व एनसीसी कैडेट्स और विभागीय छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

उक्त जानकारी महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ. शैलेश कुमार सिंह ने दिया।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
मीडिया प्रभारी